## सम्पादक की कलम से

# स्वतंत्र भारत की शिक्षा व्यवस्था

हम शिक्षा के बारे में 15 अगस्त 1947 की आजादी के पूर्व की समझ को एक तरफ रखकर चिन्तन करें कि, आजाद भारत में शिक्षा के सम्बन्ध में हमारी सरकारों ने अपने नागरिकों को कितना सक्षम, आत्म निर्भर, परोपकारी, जनसेवी बनाया तो पायेगें कि हम 72 वर्षों में अन्य क्षेत्रों की छोड़े केवल शिक्षा की बात करें तो पायेगें कि हम लगभग 70 प्रतिशत् नागरिकों को साक्षर बना सके, उनमें लगभग 10 प्रतिशत् नागरिकों को सक्षम बना सके है। इतना भारी अंतर अब और कितनों वर्षों में पूरा कर सकेगें । इसकी चिन्ता किस प्रकार की सरकार कर पायेगी । हमारी सरकार चलाने वालों की इच्छा शक्ति देश के प्रत्येक नागरिक को शिक्षित प्रशिक्षित सक्षम बनाने की क्या कार्य योजना है। इसका उत्तर कुछ–कुछ निराशा जनक मिलता है।

हाँ बाते बड़ी करने वाले नेताओं की कमी नहीं है, लेकिन यदि इन नेताओं में किसी को या उसके दल को मतदाता सरकार बनाने की गद्दी दे देती है, तो वह परिणाम देने में क्यों पिछड़ता जाता है। हमारी सरकारें शिक्षा के लिये दूरगामी शिक्षा नीति बनाने लायक शिक्षा नीतिकारों का चयन ही नहीं कर पाती है, फिर जिसे भी शिक्षा नीति बनाने का दायित्व सौंपती है वह और उसकी समिति नीयत समय में तों अपनी रिर्पोट ही तैयार नहीं कर पाती, फिर बार–बार अवधि बढ़वाती रहती है। और शिक्षा नीतिकार समिति भी जिस दल की सरकार ने उसे दायित्व दियें हैं। वह उसी दल द्वारा प्रतिपादित मार्गदर्शन जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हो उसी भाँति अपनी रिर्पोट तैयार करने दिशा में ही काम करने लगता है। समिति दूरगामी शिक्षा नीतियां बनाने कि दिशा में सौंच ही नहीं बनाती है।प्रायः तत्कालीन सरकार जिस प्रकार राजी हो उसी भाँति रिर्पोट पर विचार होता है। सरकार के बजट में शिक्षा कर बजट कितना बढ़ा चढ़ाकर प्रावधान कराने को प्रेरित कर सकती है, उसी अनुरूप रिपोर्ट बन जाती है ।

आजाद भारत में ऐसी शिक्षा नीति ही नहीं बन पा रही है जिसमें शत्प्रतिशत् नागरिक रोजगार मूलक निशुल्क गुणवत्ता युक्त शिक्षा की आधार शिला रख सके । यदि सभी नागरिकों को शिक्षित करने की नीतियाँ बन जाय तो भारत वर्ष का नागरिक विश्व पटल पर अपना परचम लहरा सकता है। सरकारों को इस दिशा में कोई ठोस पहल करने हेतु समझ बनाना होगी। यदि समझ बन जाय तो शैक्षणिक क्रान्ति तो आमूल चूल परिवर्तन ला देगी।

जुलाई माह में एक फिल्म ''सुपर 30'' प्रदर्शित हुई जिसमें प्रो. आनन्द कुमार पटना बिहार ने ऐसा करिश्मा कर दिखाया कि दीन हीन गरीब परिवार के विद्यार्थियों में से 30 विद्यार्थियों को वह आई–आई–टी का प्रशिक्षण देता है और प्रायः सभी सफल हो जाते है। शिक्षा माफिया के तमाम जुल्म सहन करते हुए विश्व पटल पर शिक्षा की पहुँच सबसे नीचे के तबको तक पहुँचाने में सफल हो रहा है। यदि सरकारे भी इसी का उदाहरण लेकर कुछ करने की नीतियाँ बना सके तो अपने देश में कोई भी व्यक्ति निरक्षर नहीं रह सकता है।देश के सभी भागों में शिक्षा माफिया का शिक्षा पर राज चल रहा है। अभिभावकों की जिनकी आर्थिक हैसियत ऊँची होती है उन्हीं की सन्तानों को निजि विद्यालयों में प्रवेश मिलता है जो जितनी फीस चुका सकता है उसी भाँति विद्यालय का चयन कर लेते हैं । इन विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थि प्रायः शासन–प्रशासन उद्योग व्यापार डॉक्टर, इन्जीनियर, वैज्ञानिक, एडवोकेट जज, राजनेता, शासक बन रहे है। जिनके अभिभावक आर्कि रूप से कमजोर है उनके बच्चों के लिये सरकारी स्कूलों जहाँ प्रायः भोजन करने वजीफा लेने सरकारी सुवीधा लेने जैसी ही व्यवस्था हो रही है। और विद्यालयों अर्ध–शिक्षित होने लायक ही बन पाता है। इस परिवेश को समझकर शिक्षा नीति इन वर्गों के अनुकूल बनना आवश्यक है।

सामाजिक शैक्षणिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतीराव फुले प्रथम शिक्षिका सावित्री बाई फुले ने हमारे देश में शैक्षणिक क्रान्ति का आगाज कर अछूत–गरीब निराश्रित परिवार के बच्चों को जिन्हें शिक्षा पाने का तो दूर धर्मशास्त्रों पुराणों के शब्द सुनने का ही अधिकार नहीं था, उनके बच्चों को स्वंय ने विद्यालय प्रारम्भ कर शिक्षित करने का अभिमान चलाया, अनेक समस्याओं का सामना करते हुए फुले दम्पत्ति रोजगार मूलक गुणवत्तायुक्त निशुल्क शिक्षा का द्वार खोल दिया। परिणाम स्वरूप डॉ. अम्बेड़कर जैसे संविधान रचियता बने आज हजारों शिक्षा से वंचित मानव शिक्षित होकर देश दुनिया में अपना स्थान बनाने में सफल हो रहे हैं। चाहे राजनीति हो उद्योग व्यवसाय है। या अन्य क्षेत्र सभी फुले दम्पत्ति के आदर्शों के मानव आगे बढ़े रहे है। फुले दम्पत्ति अम्बेड़कर ने तो रास्ता बता दिया इस पर आगे बढ़ना सरकार का काम है।

स्वतंत्र भारत का 72वाँ पर्व हम 15 अगस्त मना रहे है। हमारे प्रधानमंत्री लालकिले की प्राचीर से अपना सम्बोधन देंगे, जिसमें हम आशा करते है कि देश के बजट में शिक्षा का इतना प्रावधान करने का वचन दे देवें कि प्रत्येक नागरिक रोजगार मूलक गुणवत्ता युक्त निशुल्क शिक्षा पाने के लिये अवसर बना देवें।

प्रधान मंत्री जी से अपेक्षा है कि हमारे देश की दूरगामी शिक्षानीति निष्पक्षता पूर्वक बनाकर ''सर्वशिक्षा अभियान'' को असली रूप दिलाने हेतु ठोस कार्य योजना बनाकर प्रभावशील करने की दिशा में कार्य प्रारम्भ कराये।

प्रधान मंत्री का सबका साथ–सबका विकास एवं सबका विश्वास के नारे को सबको शिक्षित करने का नारा भी लगा दे, तो हमारे शिक्षा नीतिकार भी सबको निशुल्क गुणवत्ता युक्त रोजगार पूरक शिक्षा नीति बनाने की और प्रयास करेगें । ताकि राष्ट्र का होकर उत्थान तेजी से आगे बढ़ेगा।

स्वतंत्र भारत की ऐसी ही शिक्षा व्यवस्था स्थापित होने की कामना करते है।

स्वतंत्रता दिवस अमर रहे ।

**– रामनारायण चौहान**

# क्या आप जानना चाहोगे?

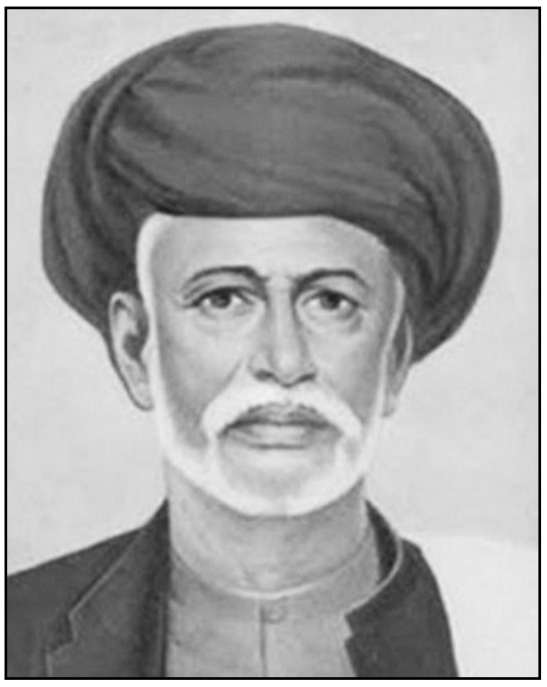

महात्मा जोतिराव फुले का माहात्मय इसी बात से स्पष्ट हो जाता है कि वे तत्कालीन समाज को धर्म युग (दि एज ऑफ रिलिजन) से निकाल कर तर्क युग (दि एज ऑफ रिलिजन) में ले आये, धार्मिक अंधविश्वास के पारंपरिक मध्य युग से बुद्धिवाद के आधुनिक युग में ले आये।

जिनके सिद्धांतों से आज भी विश्व में उथल–पुथल मची हुई है, वे यूरोप के महान क्रांतिकारी कार्ल मार्क्स (सन् 1818 से 1883) जोतिराव के समकालीन थे। इन दोनों के कार्यों का उद्देश्य एक ही था– शोषितों तथा पीड़ितों को शोषण तथा ठगी से मुक्त करना और अज्ञान तथा अन्याय को हमेशा के लिए दफना देना, लेकिन इन दो युगपुरुषों के कार्य के रूपों में बड़ा अंतर था। उस वक्त यूरोप में मंत्र युग का आगमन हो चुका था, जबकि महाराष्ट्र मंत्र युग में ही जी रहा था। जब कार्ल मार्क्स ज्ञान की पहाड़ी पर खड़े होकर मजदूर वर्ग को सत्ताधारी बनने के लिए ललकार रहे थे, तब जोतिराव अज्ञान तथा अंधकार की अति प्राचीन घाटी में शूद्रों, अतिशूद्रों तथा नारी वर्ग को ज्ञानरूप प्रकाश की पही किरण दिखा रहे थे। इसलिए यदि कार्ल मार्क्स महात्मा हैं, तो जोतिराव महात्माओं के महात्मा हैं।

जोतिराव ने अज्ञान का कारावास तोड़ डाल, जन्मगत विषमता का जाल तोड़ दिया, विश्व का ज्ञान भंडार सबके लिए खोल दिया और निरर्थक अंधविश्वास को चुनौती देकर हिंदू धर्म में क्रांति कर दी। इसलिए जोतिराव निःसंदेह महात्माओं के महात्मा हैं।

जोतिराव ने पहली बार समग्र क्रांति का शंख फेंका और गाँव–गाँव, घर–घर, पर्वत घाटी से समानता की वायु बहने लगी।

वही मनुष्य सच्चे अर्थों में महान होता है, जो अपना रक्त सींचकर मार्ग बनाता है ताकि दूसरे उस पर सुख–चौन से चल सकें। जोतिराव के अथक प्रयासों का ही फल हैकि आज न्याय, शिक्षा, ज्ञान, कार्यशीलता तथा प्रगति में बाधा उत्पन्न करने वाला संकटों का पहाड नष्ट सा हो गया है। यही कारण है कि यद्यपि जोतिराव एक सौ उन्नतीस वर्ष पहले गुजर गये हैं, तथापि वे अब भी महाराष्ट्र के सामने खड़े हैं– अटल ध्रुव तारे की तरह, सह्याद्रि पर्वत की शंखाकार चोटी की तरह और देश व दुनियाँ को शोषण उत्पीड़न अन्धविश्वास असामनता को समाप्त करने हेतु प्रेरणा दे रहे है।

जोतिराव व्यक्ति नहीं थे। इसका मतलब है कि उनके न व्यक्तिक मित्र थे न व्यक्तिक शत्रु। जो मनुष्य–मनुष्य के बीच ऊँच–नीचता के पक्षधर थे, वे उनके शत्रु थे और समानता के समर्थक मित्र! जोतिराव के इर्द–गिर्द जो लोग जमा हुए थे, वे विचारों के पास जमा हुए थे, व्यक्ति के पास नहीं। ऐसा व्यक्ति व्यक्ति नहीं रह जाता, वह शक्ति बन जाता है। ऐसा व्यक्ति किसी व्यक्ति के विरूद्ध नहीं, विशिष्ट प्रवृत्ति के खिलाफ लड़ता है।

जोतिराव का विचार करते हुए यदि हम वर्तमान स्थिति को देखें तो पाएंगे कि अब समय बदल गया है, राज्य कर्ता बदल गये हैं। नये हित संबंध स्थापित हो गये हैं। शोषक बदल गये हैं और शोषण के तरीके भी बदल गये हैं। महंगाई बढ़ गई है, स्वातंत्र्योत्तर काल में गरीब ज्यादा गरीब और धनवान ज्यादा धनवान बन रहे हैं, शिक्षा फिर धनवानों की बपौती बन रही है। समाज आज दो ही वर्गों में बंट गया है– बहुजन समाज और बहुजन समाज! इस स्थिति को देखते हुए लगता है कि इस महात्मा के मुक्ति संदेश की पहले की अपेक्षा अधिक आवश्यकता है और उसको पूरी तरह कार्यान्वित करने के लिए अब भी लंबा रास्ता तय करना होगा।

महात्मा जोतीराव फुले के आदर्शों को अपना कर मानव समाज उन्नति एवं प्रगति की दिशा में आगे बढ़ता रहें।

**रामनारायण चौहान**

# नायब सैनी सांसद का जीवन परिचय

आपका जन्म 25 जनवरी 1970 को प्रसिद्ध समाजसेवी चौ. तेलूराम सैनी के घर गांव मिर्जापुर माजरा जिला अंबाला में हुआ। बी.ए.एल. बी. की डिग्री प्राप्त कर समाज सेवा आरंभ कर दी । राजनीति में भी आपकी काफी रूचि रही, इसलिए आपने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की । भारतीय जनता पार्टी में आप जिलाा अंबाला प्रधान पद पर रहकर समाज की राजनीतिक, सामाजिक सेवा की है, अक्टूबर 2014 में हरियाणा विधान चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने नारायणगढ़ विधानसभा हल्के से आपको अपना उम्मीद्वार बनाया और आप भारी मतों से विजयी होकर विधायक बने। विधायक बनने पर हरियाणा सरकार में आपको लेबर एण्ड एम्पलाई मेन्ट

माईन्ज व ज्यूलोजी विभाग में मंत्री पद को सुशोभित कर लोगों की सेवा की।

आप सुबह 8 बजे से लोगों की समस्याओं को सुनकर निवारा करते रहते हैं। समस्त हरियाणा निवासी आपके कुशल व्यवहार एवं कार्यकुशलता के कारण सुबह ही अपनी समस्याओं के निवारण हेतु आपके दरबार में पंहुच जाते है। आप मैडिकल फ्री कैंप रक्तदान शिविर एवं समाज के हर वर्ग के सम्मेलनों में सहर्श भाग लेकर लोगों की सेवा कर रहें हैं।

17वीं लोकसभा के चुनाव में आपको कुरूक्षेत्र लोक सीट से भारतीय जनता पार्टी ` अपना उम्मीद्वार बनाया। फलस्वरूप आपके कार्यकुशलता एवं समाजसेवी को देखते हुए कुरूक्षेत्र संसदीय क्षेत्र के लोगों ने अपना भरपूर समर्थन दिया और आप लगभग 4 लाख वोटों से विजयी होकर सांसद निर्वाचित हुए।

आपकी इस विजय पर कुरूक्षेत्र संसदीय क्षेत्र के लोगों के साथ–साथ समस्त हरियाणा में खुशी मनाई गई।

हम आपके उज्जवल भविश्य व दीर्घायु की कामना करते हैं।

**संकलन**

**राजेन्द्र कुमार सैनी**

## सामाजिक चिंतन (भाग-26)

# जागरूकता सक्रियता से असली समाज सेवा

प्रायः सभी मानव समाज सेवा करना चाहते है, किन्तु समाज में चिन्तन, मनन, जागरूकता, सक्रियता, परोपकार की ठोस पहल अभी और करना शेष है। यदि समाज सामाजिक शैक्षणिक आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अपने लोगों की भूमिका स्थापित ही नहीं कर पाये, तो फिर समाज कैसे आगे बढ़ पायेगा, कोई न कोई तो आगे बढ़े और समाज को ऐसा विश्वास दिलाये कि समाज आपके साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर पँहु दिशा में समाज की उन्नति प्रगति एकजुटता दिखाते हुए, आगे के लिये उदाहरण स्थापित करने लायक बन जाये।

हाँ यह नहीं कह सकते कि समाज पूरी तरह सोया हुआ है, हमारे बड़े बुजुर्गों ने जितना भी संभव हो सका, अपनी तत्कालीन समझ बनाकर आपस में मिलकर सहकार की भावना से समाज सुधार के साथ–साथ समाज विकास के कामकिये, जिसके कारण ही देशभर के शहरों कस्बों ग्रामों में सामाजिक सम्पत्तियां स्थापित हुई है। अनेक मन्दिर, धर्मशाला, विद्यालय, महाविद्यालय, स्वास्थ्य सेवा परोपकार की भावना से बनाकर आज की पीढ़ी के लिये स्मरण करा रहे है कि आप भी कुछ न कुछ तो जरूर करो, यदि करोगे तो समाज जरूर आगे बढ़ पायेगा।

हमारे महापुरूष महात्मा बुद्ध, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक, संत कबीर, नानक, महात्मा जोतीराव फुले, छात्रपति शाहू महाराज, नारायण मेघाजी लोखण्डे, बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर, युगपुरूष, रामजी महाजन आदि जो अपने लिये अपने वालों के लिये ही नहीं अपितु समाज के प्रत्येक तबके के लिए अपनी–अपनी समझ एवं सामर्थ्य से जन मानस के कल्याण करने हेतु ऐसी समाज सेवा की जो अमिट रूप से विद्यामान रहना है। आने वाली पीढ़ी को याद दिलाते हुए इससे भी आगे कुछ करने की प्रेरणा पैदा करती है।

देश के विभिन्न अंचलों में अपने समाज का कोई भी व्यक्ति जब जाता है और समाज की धरोहर की तलाश कर सही मुकाम पर यदि पँहुच जाता है, तो समाज के व्यक्ति जाने अन जाने ही परस्पर प्रेम की भावना से आदर–सत्कार करने हेतु उस्तुक बने रहते है। जो व्यक्ति समाज सेवा की भावना से अपना घर–बार छोड़कर कहीं निकल जाता है तो समाज उसे हाथों–हाथ उठाकर अपनत्व की भावना से जो भी संभव हो मान–सम्मान जरूर करता है। आपकी बातों तथा मार्गदर्शन को समझने हेतु लालायित रहता है। चाहे कितना ही बड़ा धनवान, सामर्थ्यवान, बलवान, गरीब, मध्यम किसी भी श्रेणी का व्यक्ति हो, वह अपने समाज के आये हुए अतिथि का स्वागत करने हेतु तत्पर बना रहता है।

आज कल लोग समाजसेवी तो हरकोई बनना चाहता है किन्तु अपना घर परिवार रहने का मुकाम छोड़े बिना ही समाज सेवी बनने की लालसा पाले रहता है, ऐसे में किस प्रकार की समाज सेवा संभव हो सकती है। यदि समाज सेवा की भावना जाग्रत हो जाय तो घर–बार का सामंजस्य बनाते हुए भी समाज के लिये कुछ भी कर सकता है। और यदि कुछकरेगा तो परिणाम जरूर आयेगा और परिणाम आयेगा तो उन्नति तरक्की चहुँ और संभव हो सकती है। कुछ समाज नेता घर बैठे ही उपदेश मार्गदर्शन देने के आदि बन जाते है किन्तु ठोस कुछ करते नहीं है, लेकिन अच्छे समाज सेवी कहलाना अपनी शान समझ लेते है।

सौंचिये समाज के लिये कुछ करने की ठान लिजिए और अपने जीवन के प्रत्येक पल–क्षण में से समय निकाल कर कुछ भी सेवा, परोपकार करना प्रारम्भ कर दीजिए हाँ अपनी क्षमता में ही परोपकार, समाज सेवा संभव हो सकती है जरूरत से अधिक संभव नहीं हो सकती।

ऐसे भी समाज सेवी होते है। एक उदाहरण लीजिए महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान की भूमि लेने के लिए अकस्मात रूप से नागौर जिले में हम पहुँच वहाँ एक शासकीय कार्यालय में एक व्यक्ति से अधिकारी के बारे में जानकारी ली, उस व्यक्ति ने सामान्य जानकारी तो दी, किन्तु जब उसका हमने नाम एवं समाज की जानकारी ली तो वह समाज का व्यक्ति ही निकला उसने समाज के व्यक्ति जानकर अपनी कैंसर की बीमारी भूलकर हमारे लिये सभी संभव सहयोग करना प्रारम्भ कर दिया। और जब–जब हम उससे मिले उसने अपने सभी जरूरी काम छोड़कर या तालमेल बढ़ाकर हमारे साथ पूर्ण सहयोगी बना रहा। यह भी होती है समाज सेवा।

कई समाज सेवी दिखावा भी करते है कि, मैं तो बहुत बड़ा समाज सेवी हूँ, मेरा नाम तो दुनिया में अवश्य अमर होगा किन्तु जागरूक, सक्रिय होकर परस्पर सेवा के लिये आगे बढ़ता ही नहीं ऐसे में कैसे संभव होगा कि समाज उन्नति कर सके। यह दिखावे की समाज सेवा किसी के काम की नहीं हो सकती है।

आइये हर कोई किसी उम्र का कितना ही गरीब, मध्यम, अमीर, महिला, पुरूष कोई किसी भी जागरूक सक्रिय होकर परोपकार के लिये अपनी–अपनी क्षमता अपनी सुविधा के अनुरूप दुसरों के लिये जो कोई काम कर रहे है। उन्हें तन–मन–धन से अपनी स्वेच्छा से सहयोग करने हेतु आगे बढ़ जाइये। यही आपकी जागरूकता देश व दुनिया में एक नई रोशनी फैलायेगी। । और समाज का उत्थान एवं विकास अवश्य होगा।

**रामनारायण चौहान**


**महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान**

ए-103, ताज अपार्टमेन्ट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096
फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171
E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

**आजीवन सदस्यता फॉर्म**

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।
मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/- शिक्षादान की राशि रू. 11000/-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली, IFSC कोड नं. SBIN/0010323 के करन्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूं।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

1. नाम
2. पिता/पति का नाम
3. जन्म तिथि 4. ब्लड ग्रुप
5. शिक्षा
6. व्यवसाय
7. वोटर कार्ड नं. 8. ड्राईविंग लाइसेंस नं.
9. आयकर पेन कार्ड नं. 10. आधार कार्ड नं.
11. स्थायी पता

पिन कोड

12. पत्र व्यवहार का पता

पिन कोड

13. फोन/फैक्स नं. 14. मोबाईल नं.
15. ई-मेल

Passport Size Photo

दिनांक: प्रभारी के हस्ताक्षर ( कोड नं. ) आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर

**कार्यालय उपयोग हेतु**

श्री..... ने रसीद नं. ..... दिनांक ..... से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष कोषाध्यक्ष

## आपसी बात

***शिक्षा इशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं.01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।***

***माह - जून से जुलाई 2019***

● राजस्थान– हरगोपाल भाटी (झालावाड़), ओ. पी. सैनी, रिटा.आई. ए.एस. , एड.अनुभव चन्देल, पूनमचन्द कच्छावा, बुधसिंह सैनी, कालूराम बुनकर, (जयपुर), भगवती माली (डेगाना), पी.सी. सैनी (कोटा), ताराचन्द गेहलोत (पुष्कर)।

● मध्य प्रदेश – जगदीश सैनी (जबलपुर), डॉ. प्रेमलता सैनी, छाया सैनी, आर.डी. माने, गजानंद भाटी जगदीश सोंलकी, अविनाश फसाटे, मधु अम्बाड़कर, जी.पी. माली, राजेन्द्र अम्बाड़कर, सुनील अचारकाटे (भोपाल), लीलाधर धारवे, अनिल बारोड़, गजानन्द रामी, लक्ष्मीनारायण चौहान, गिरजाशंकर चौहान, गीतारामी शिवनारायण गेहलोत, सुरेन्द्र सांखला (उज्जैन), सत्यनारायण चौहान यादवलाल चौहान, (इन्दौर), उमेश पंचेश्वर (बालाघाट), दिनेश माली (तालोद), विनोद मकवाना (बड़नगर), जगदीश आलीवाल (खरगोन), मनोहर सुमन (श्योपुर), ।

● महाराष्ट्र– शंकरराव लिंगे (सोलापुर), राजेन्द्र सैनी (मुम्बई), महेश गणगणे (अकोला), डॉ. के एस. यावलकर (नागपूर)।

● उत्तरप्रदेश– इन्जि. एस.बी. सैनी (कानपूर) श्रीचन्द सैनी, (मेरठ) ।

● गुजरात / गंगाराम गेहलोत, (अहमदाबाद), उषा रामी (आनन्द) ।

● छत्तीसगढ़– हरीश पटेल(बालोद), ।

● बिहार– संजय मालाकार (पटना), मदन मोहन भक्त (भोजपुर) ।

● हिमाचल प्रदेश– पी.डी.सैनी (कांगड़ा), ।

● हरियाणा– हेमन्त सैनी (रेवाड़ी), राजेन्द्र कुमार सैनी (लाड़वा), दिलबाग सिंह सैनी राजकुमार सैनी (गुड़गांव),

● कर्नाटक – एन.एल. नरेन्द्र बाबू (बैंगलोर),

● दिल्ली– चौ.इन्दराजसिंह सैनी, खुशीराम सैनी, आजादसिंह सैनी, रमेश कुमार सैनी, के.पी. सिंह, सी.ए., विनय सैनी, इन्जी. पवन सैनी, सुरेश सैनी, गीता सैनी, जी.एल. सैनी, कृष्णदेव भारल, सुमन सैनी, डॉ. नरेन्द्र सैनी,

● जम्मू एण्ड कशमिर– श्री कृष्ण सैनी (जम्मू)।

● तमिलनाडू– व्ही. एम. पल्लव मोहम वर्मा (चैन्नई)।

● पंजाब – भगतसिंह सैनी (फतेहगढ़)

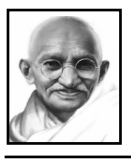

**असली महात्मा में नहीं।
असली माहात्मा तो जोतीराव फुले ही है।**

**महात्मा गांधी**

**हिन्दुस्तान के वाशिंगटन।
महात्मा जोतीराव फुले ॥**

**सयाजीराव गायकवाड़**

**कलम की ताकत दुनिया में सबसे बड़ी है।
चाहे एक रोटी कम खाओ, लेकिन बच्चों को जरूर पढ़ाओं ॥**

**महात्मा बुद्ध**

**महाराष्ट्र के मार्टिन ल्यूथर।
महात्मा जोतीराव फुले है।**

**छत्रपति शाहू महाराज**

**''मानुष जन्म दुर्लभ है देह न बारम्बार।
वायु थे फल झाड़ी पड़या बहुरी ने लागे डारि''**

**(सन्त कबीर)**

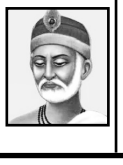

From: Pre. Month

# A FORGOTTEN LIBERATIOR, THE LIFE AND STRUGGLE OF SAVITRI BAI PHULE

**BY:- BRIJ RANJAN MANI & PAMELA SARDAR**

A unique spiritual Vision sustained and animated Savitribai's life and struggle. A deeply devout and compassionate person, she drew inspiration and strength from the benevolence of a higher power. Her belief in a higher power, however, led her to wage a war against discriminatory brahmanic gods. She. Despised caste obsessed brahmanic religion and its rituals, but she was great admirer of many moral and annobling tenets of other religions, especially Christianity. At the heart of her religiosity was compassion and a sacred morality that bound the individual with society. Like Jotiba Phule, She appreciated to power of culture and religion in the politics of transformation. Institutionalised religions, especially the caste-brahmanic Hinduism, have long been the target of social revolutionaries. But the tendency among many radical secularists to dismiss all religion-spiritual experiences as hoax, is preposterous. Even Marx was not as dismissive of religion as he is generally made out to be. This becomes clear when we read him carefully. As he writes in contribution of real suffering. Religion is the sigh of the oppressed creature, the heart of a heartless world, and the soul of soulless conditions. It is the opiate of the people." In other words, religion is not unreal for the people." In other words, religion is not unreal for the people." In other words, religion is not unreal for the people. The important thing is, the use of abuse of religion. While most institutionalised religions have tended to align with the powers that be thus going along the oppressive status quo, there have been other traditions where

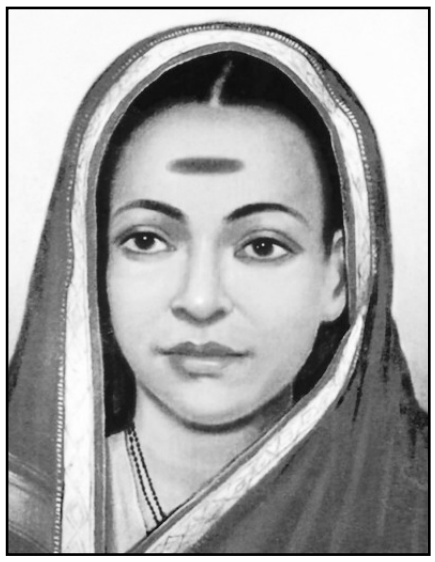

religio-spiritual greats have invoked God and religion to build an exploitation-fee world. Great medieval saints and poets such as Kabir, Raidas, and Tukaram would employ religious idioms to attack the oppressive political and religiou authority. In their hands, religion become a weapon of the oppressed. On the other hand, Tulsidas, the author of Rama-Charita-Manas, Did the opposite-he used religion in a most blatant manner to bolster caste and Brahmanism (Mani 2005). There is a world of difference between a Kabir and a Tulsidas Unlike many atheist radicals, Savitribai and Jotiba Phule were sensitive to the power and hold of religion on people's imagination. They saw real Religion beyong caste and Brahmanism, and strived to build an emancipator religion. Phule's Sarvajanik Satya Dharma The Religion of (Universal Truth), as the very name suggests, was an attempt to build such an inclusive and emancipator religion.

At the centre of Savitribai Phule's struggle was material and socio-spiritual liberation of the oppressed. It is a measure of her greatness that she lives up to this ideal more in her deeds than in her words. Anyone who is familiar with her life knows that she cared for other's children like her won, and she was particularly fond of the weak and the abandoned. She died while she was nursing a plague-affected child-she got infected while serving the affected people. In her life and her death, she embodied the noble and the sublime. Not grandiloquent words and grat ideals in abstract, but her day-to-day public life, her suffering with the Suffering people makes her majestic.

The revolutionary task that Savitribai Phule took-and endeavoured to accomplish- Still remains achallenge for all belivers in social democracy. The overall atmosphere, the times have changed dramatically, but a large majority of people in India Still remain in economic, social, and cultural subjugation despite the claim of 'deepening democracy.' Her glorious struggle and public life is forgotten, let alone taken forword by most legislators, ministers, chief ministers and even from those who belong to the dalit-OBC background and dominate the Indian Parliament and state legislatures today. Having seen through the game of upper caste politicians, the toiling castes and communities are now turning to their own caste people to lead them. While this is step ahead in the right direction, their own representatrives are turning out to exploitative and corrupt forces. Willing only to cling to their powerful chairs and shamelessly willing only to cling to their powerful chairs and shamelessly willing to get co-opted and corrupted in the brahmanic caste culture, most dalit obc legislators and ministers are proving to be the worst enemies of their own caste people. Such things are taking place because the poor and the marginalised fail to rally round a united struggle for an alternative politics and a new society where everyone gets a measure of education and other basic minimusms of life for which people like Savitribai phule struggled for her entire life. It is here that the legacy of Savitribai Phule shines through, reminding us of our responsibility, giving us hope for a socio-cultural turnaround, and renewed efforts to turn this hope into a reality.

●●●

# महामना फूले का व्यक्तित्व एवं क्रतित्व बनाम उनके अनुयायी

| महामना फुले | उनके अनुयायी |
|---|---|
| 1. 21 वर्ष (1848) की आयु में, बहुजनों (शूद्रों) के लिए सीमिति आर्थिक साधनों विद्यालयों से पहला स्कूल बच्चों के लिए खोला। बालिका शिक्षा पर विशेष जोर। | अच्छे आर्थिक साधनों के बावजूद हमारे विद्यालयों की संख्या नगण्य है। हम लोग विद्यालयों के विषय में सोचते भी नहीं हैं। |
| 2. वर्ष 1853 में ब्रिटिश सरकार से अनुरोध किया कि जो धन ब्राम्हणों को दक्षिणा स्वरूप दिया जाता है उसको शूद्र शिक्षा पर लगाया जाय सरकार ने दक्षिणा की आधी रकम शिक्षा के लिए आवंटित कर दी। | हम लोग न तो शिक्षा के लिये, न महामना फूले के अन्य अधूरे कार्यों को पूरा करने का प्रयास करते हैं। सत्य शोधक समाज का श्रेष्ठ कार्य, इस समय भारत के उत्थान की महती आवश्यकता है। हम सबको यह कार्य करना चाहिए। |
| 3. महामना फूले के व्यक्तित्व में थामस पेन तथा जान स्टुअर्ट मिल के विचारों का बड़ा प्रभाव था उनके साहित्य को पढ़कर उनके मन में वैज्ञानिकता, सच्ची धार्मिकता एवं अधिकार कर्तव्य का बोध हुआ। | उनके अनुयायी पश्चिमी विचारकों सुकरात, प्लेटो, फ्रायड रू को न पढ़, पुराण, हनुमान चालीसा पढ़ अपना मानसिक विकास नहीं कर पाते। व्यर्थ में अपना समय और धन बरवाद करते |
| 4. महामना फूले ने पूना में रहकर ब्राम्हण विरोध को झेलकर बहुजनों (शूद्रों) के लिए अपना कुआँ पानी पीने के लिए खोला। | ऐसा रचनात्मक कार्य सामूहिक रूप से हम नहीं करते जैसे वर्षा जल संचय, वृक्षारोपण, जल की बरबादी, भोजन की बरबादी रोकने का काम महामना फूले के नाम से संचालित करना राष्ट्रहित में होगा। |
| 5. 18 जुलाई 1880 को महामना फूले ने शराब बन्दी के लिए ब्रिटिश सरकार से गुहार लगाई थी | उनके अनुयायी शराब बन्दी की सोच भी नहीं सकते क्योंकि उनके कुछ अनुयायी स्वयं शराब के आदती हैं। |

| महामना फुले | उनके अनुयायी |
|---|---|
| 6. वर्ष 1885 (कांग्रेस स्थापना वर्ष) में महामना फूले उस समय कांग्रेस में शामिल नहीं हुये क्योंकि कांग्रेस उस समय प्रगतिशील ब्राम्हणों का संगठन था। उन्होंने गांव–गांव सत्य शोधक समाज के सदस्यों द्वारा बिना पुरोहितों (ब्राम्हण) शादियां करवाईं, तमाम संस्कारों को अनावश्यक घोषित कर बहुजनों का समय, धन, ऊर्जा बचाई। | उनके अनुयायी अभी भी ब्राम्हण से पूछकर अपने बच्चों का नाम रखते हैं, दुकान खोलने का मुहूर्त निकलवाते हैं, शादी के लिए तिथि तय करवाते हैं, यह हमारी मानसिक गुलामी की पराकाष्ठा है। उनके अनुयायी अपनी सुविधा के अनुसार इन कार्यों की तिथि भी तय नहीं कर पाते। |
| 7. 1889 में दांये पक्षाघात (दांयी ओर की विकलांगता) के बावजूद महामना फूले ने बांये हाथ से सार्वजनिक सत्य धर्मश पुस्तक लिखी, यह पुस्तक विश्व बन्धुत्व को स्थापित करने में सक्षम है। 1891 में प्रातः वन्दनीय प्रथम शिक्षिका माँ सावित्री बाई फूले ने "सार्वजनिक सत्य धर्म" पुस्तक को प्रकाशित करवाया। इस पुस्तक में स्त्री उत्थान पर जोर है। | हम तो दोनों हाथ स्वस्थ होकर भी। कुछ अच्छा, रचनात्मक नहीं लिखते, लिखते भी हैं तो काल्पनिक कविता, कहानियां, जिनका कोई उपयोग भी नहीं। लिखना तो दूर जो वैज्ञानिकता, तर्कशीलता का साहित्य न पढ़कर अवैज्ञानिक आधारों का साहित्य पढ़ेगा उसका मानसिक विकास कैसे होगा ? हम (अनुयायी पति–पत्नी) तो टी0वी0 (टेलीविजन) बीबी में मस्त हैं। |

**सारांश/निवेदन**

हम समस्त महामना फूले के अनुयायियों (स्त्री–पुरुष) को घर में समता स्थापित कर, स्त्री शिक्षा, स्त्री विकास पर जोर देकर अदार्शनिक यात्रा नहीं करनी चाहिए। बल्कि सभी लोग पेड़ पौधे लगाकर पर्यावरण सुधार करें यही समाज–राष्ट्र हित में है। ऐसा कर हम महामना फूले के सच्चे उत्तराधिकारी सिद्ध होंगे।

एस0बी0 सैनी (B.E.)
पूर्व मण्डल अभियन्ता BSNL
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576

# देश भर के समाचार

● भिवानी (हरि.)– सैनी कल्याण परिषद के चुनाव में सत्यनारायण सैनी, अध्यक्ष सुरजीतसिंह सैनी महासचिव बने।

● भरतपुर (राज.)– सर्व सैनी समाज की मिटिंग 21 जुलाई को हुई जिसमें शिक्षा छात्रावास एवं समाज विकास पर विचार किया।

● गेहाना (हरि.)– शेफाली सैनी पिता सुरेश सैनी माता सुमन सैनी एम.एस. सी 8.7 के जी.पी.एस. के साथ डी.सी. आर. न्यू एस. टी. से उत्तीर्ण की। एम.एस.सी. करते हुए सी. एस.आर.आई. करने के बाद दिल्ली युर्नीवसिटी से ट्रेनिंग ली नेट परीक्षा में 51 वीं रैंक मिली अब अमेरिका में रिसर्च करेगी। बधाई।

● बूँदी (राज.)– जिला अस्पातल के वरिष्ठ सर्जन डॉ. अनिल सैनी, असहाय मरीजों को निशुल्क उपचार करते है। इनका वाट्सएप न. 8949204341 है।

● सागर (मप्र.)– 19 जुलाई को अंजू सैनी ने महिला सदस्यों की मिटिंग में बच्चों को शिक्षित करने का संकल्प लिया।

● दिल्ली– वेस्ट इंडीज मेच के लिए नवदीप सैनी का चयन हुआ। वनडे टीम चयन पर बधाई ।

● शकरपुर (उप्र.)– ग्राम के पूर्व प्रधान जगपाल सिंह सैनी की बेटी दीपा सैनी के सिविल जज बनने पर बधाई ।

● सलेमपुर (उप्र.)– ग्राम गद्दा के ऋशिपाल सैनी के पुत्र विनेश कुमार सैनी के जज बनने पर बधाई ।

● उत्तराखण्ड– वैभव सैनी डिप्टि एस. पी. बनने पर बधाई ।

● पुरूलिया (वे.बंगाल)– मनोहर कोइरी की अध्यक्षता में अ.भा. कुशवाहा महासभा के अध्यक्ष राकेश मेहतो मुख्य अतिथि ने समाज को शिक्षित होकर एकता बनाने का आव्हान किया।

● अलवर (राज.)– सैनी समाज विद्यार्थी उन्नत शिक्षण संस्थान बबेरवाल की अध्यक्षता में सैनी स्कूल में बैठक हुई जिसमें समाज के जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह 25 अगस्त को आयोजित करने का निर्णय लिया।

● जयपुर (राज.)– कर्म योगी शिक्षा एवं समाज सुधार संस्था की प्रेमलता अजमेरा ने बताया कि प्रतिभा शाली विद्यार्थियों का सम्मान समारोह होगा ।

● इन्दौर (मप्र.)– राष्ट्रीय फुले ब्रिगेड की 21 जुलाई को मिटिंग।

● महाराष्ट्र– हिंगोली के पूर्व सांसद राजीव सातव ने भारत सरकार से ''फुले दम्पत्ति'' को भारत रत्न दिये जाने की मांग की है।

● भोपाल– 25 अगस्त को फूल माली समाज द्वारा प्रतिभावन विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। उक्त जानकारी गीता प्रसाद माली, हरिनारायण माली, कृष्ण गोपाल माली, एड. राजेश सैनी, शान्ति माली ने दी।

● अहमदाबाद–रानिय श्री रामी माली सैनी समाज के प्रमुख चेतनभाई, बाबू भाई रामी के चुने जाने पर बधाई ।

● नागपूर (महाराष्ट्र) – 14 जुलाई को प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान समारोह का उद्घाटन शंकरराव लिंगे अध्यक्षता मधुसूदन देशमुख प्रमुख अतिथि भाग्यश्री बनाईत प्रभात वावगे, रमेश हीरलकर, रश्मि वावेग, किरण गिरहे, संजय नाथे, गौतम क्षीरसागर, विशेष अतिथि ने किया एवं महात्मा फुले सावित्री बाई फुले के आदर्शों पर चलाने का आव्हान किया। गोविन्द वैराले, कैलाश जामगड़े आदि ने आभार प्रकट किया ।

● कंदला शेरकोट (उप्र.)– 13 जुलाई को अंतराष्ट्रीय सैनी समाज द्वारा हरवेली केम्प में कोचिंग क्लास के बारे में विनीत कुमार सैनी आदि ने विचार विमर्ष किया।

● राजगढ़ (मप्र.)– राकेश सुमन चाचोड़ा को जिला अध्यक्ष बनाये जाने पर बधाई।

● जोधपुर (राज.)– संत शिरोमणी लिखीदास महाराज की 269 वें जन्मोत्सव पर शोभायात्रा निकाली ।

● रोहतक (हरि.)– गुलाबचन्द सैनी छत्प का अभिन्दन किया गया ।

● करनाल (हरि.)– कृष्ण सैनी करनाल को आपरेटिव के चेयरमेन बने । बधाई ।

● दिल्ली– सर्व श्री प्रशान्त मौर्य 175 वीं रैंक, देवांशु सैनी 213 वीं, अंशु नैना मौर्य 292 वीं, सत्येन्द्र कुमार मौर्य 305 वीं, पंकज कुमार कुशवाहा 314 वीं, प्रियंका मौर्य 322 वीं, आरती मौर्य 322 वीं, दीया सैनी 427 वीं, अमित कुमार मौर्य 45 वीं एवं विनेश कुमार सैनी के सिविल बनने पर बधाई।

● दिल्ली – नजफगढ़ की डिम्पल सैनी ने नेशनल कराटे में गोल्ड मेडल जीता । बधाई ।

● डीडवाना (राज.)– 8 नवम्बर को मालियान सुर्य मन्दिर में सैनी (माली) विकास संस्थान द्वारा सामूहिक विवाह सम्मेलन होगा। सम्पर्क 9828788966 ए

● सोलापुर (महा.)– 12 अगस्त को 10 वीं 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान समारोह अ.भा. माली महासंघ द्वारा किया जाएगा। उक्त जानकारी भाऊ साहेब भांगडे ने दी।

● सवाई माधोपुर (राज.)– खंडार तहसील क्षेत्र के माली समाज के पंचों ने मृत्यु भोज बन्द करने का निर्णय लिया।

● बाबेन (उप्र.)– गांव हमीरपुर की स्वास्तिक सैनी भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र इसरों में वैज्ञानिक बने वे प्ज खड़गपुर से इलेक्ट्रानिक कम्युनिकेशन में एम. टेक है। बधाई।

● दिल्ली– अमेरिका से साटवेयर इन्जीनियर की नौकरी छोड़ कर भारत लोटे योगेश सैनी ने दिल्ली सहित 10 राज्यों में दीवारों पर कलात्मक आर्ट से सजाने सवारने का अभिनव कार्य कर रहे है।उन्होने लोदी गार्डन के कुडेदानों से इसकी शुरूआत की वे सार्वजनिक जगह गन्दी नहीं दिखे इसलिये वाल पेन्टिंग कर स्वच्छ भारत का संदेश दे रहे है। मन बात कार्यक्रम 28 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने योगेश सैनी को इस कार्य की सराहना की है। बधाई।

● यवतमाल (महा.)– 17 अगस्त को सर्वशाखीय माली समाज के प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान समारोह का आयोजन । उक्त जानकारी अतुलकुमार सारडे ने दी ।

● रादोर (हरि.)– हरियाणा सरकार द्वारा प्रारम्भ किये राजकीय कन्या महाविद्यालय का नाम महात्मा ज्योतिबा फुले रखा गया। कुरूक्षेत्र के सांसद ।

● रेवाड़ी (हरि.)– सैनी पब्लिक स्कूल, सैनी सीनियर सेकेण्डरी स्कूल सैनी, प्राइमरी स्कूल का संचालन करने वाली सैनी सभा के चुनाव में प्रधान शशिभूषण सैनी उप प्रधान हरिसिंह सैनी सचिव एड. बधाई ।

● अरण (महा.)– संत शिरोमणि सावता महाराज की 724 वीं पुण्य तिथि पर आयोजन में शिक्षण पर महत्व देने का आव्हान किया ।

● उज्जैन (मप्र.)–श्री गुजराती रामी माली समाज की प्रांतीय इकाई के 28 जुलाई को हुये चुनाव में नारायण जाधव (हरसोला) विजयी हुए। नरसिंह घाट धर्म प्रबन्ध समिति के चुनाव में गिरधारी लाल गौड़(पलवा) चुने गये।

● औरंगाबाद (महा.)– डॉ. सुप्रिया बेहरे व डॉ. शांतिलाल म्हेत्रे का 30 जून को सत्यशोधक पद्धिति से विवाह हुआ।

● मुम्बई(महा.)– सावित्रीबाई ज्योतिबा फुले शिक्षण सहायक मंडल का 50 वीं (स्वर्ण महोत्सव) पर पूर्व उप मुख्यमंत्री छगन भुजवल, शंकरराव बोरकर, डी के माली कल्याण में आयोजित समारोह में भाग लिया ।

**संकलन**

**रामलाल कच्छावा**
कोषाध्यक्ष

दिल्ली। महात्मा फुले समाजिक शिक्षण संस्थान के सचिव जी.एल.सैनी व अन्य पदाधिकारी श्रीमती नीता सैनी, राजकुमार सैनी, शिवराज सिंह सैनी व अन्य।

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत अपने परिवार के साथ श्री हरी नारायण इंदोपिया के विवाह की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर उनके परिवार के साथ।

सोलापुर। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के पूर्व अध्यक्ष शंकर राव लिंगे व अन्य पदाधिकारी गण एक कार्यक्रम में भाग लेते हुए।

# प्रस्तावित शिक्षा नीति से बदलाव

बचपन की आरंभिक देखभाल, स्कूल शिक्षा का अभिन्न अंग बनेगा, पूर्व–स्कूल के तीन साल (आयु 3 से 6 वर्ष)कक्षा 1 और 2 (8 वर्ष की आयु तक से) के साथ जोड दिये जाएगें, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के दायरे में 3 स 18 वर्ष के बच्चों का लाया जाएगा ।

बच्चों के संज्ञानात्मक और सामाजिक भावनात्मक विकास के चरणों पर आधारित 5334 पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचा मौजूदा 102 मॉडल की जगह लेगा, पहले पांच वर्ष आधारशिला चरण (आयु 3.8 )में उसके बाद कक्षा 3से5 (उम्र 8.11वर्ष) तक प्रारंभिक चरण मेंए कक्षा 6 से 8 (आयु 11 से 14 वर्ष) तक माध्यामिक चरण के साथ समाप्त होगा फोकस बहुभाशी और अंतर विषयी शिक्षा पर होगा । किताबों का बोझ और रंटतू पढ़ाई को कम करने के लिए पाठ्यपुस्तकों के बदले हाथ के हुनर, प्रयोगात्मक और विष्लेशणात्मक शिक्षण पर जोर होगा सब के लिए अनिवार्य सामान्य विषय होंगे, लेकिन पाठय्क्रम और सह–पाठय्क्रम या पाठ्यत्तर क्षेत्रों के बीच कोई फर्क नहीं होगा, पाठय्क्रम में बहुभाषा प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों, वैज्ञानिक स्वभाव, नैतिक तर्कशक्ति, सामाजिक जिम्मेदारी डिजिटल साक्षरता और स्थानीय समुदायों के महत्तवपूर्ण मुद्दों के ज्ञान को बढ़ावा दिया जाएगा ।

मसौदा त्री–भाषा फॉर्मूले को जारी रखने करता है, लेकिन भाषाओं की पंसद में लचीलेपन का भी प्रस्ताव है, बशर्ते छात्र किसी भी तीन में दक्षता दिखाएं, हिन्दी और अंग्रजी ही अब कक्षा 6 के आगे की भाषा नहीं ।

कक्षा 9से 12 के बीच बोर्ड परीक्षओं में मुख्य क्षमताओं, बुनियादी शिक्षा, कौशल और विशलेषण की परख की जाएगी छात्रों को वर्ष में दो बार बोर्ड परीक्षा देने की अनुमति होगी, जब कंप्यूटरीकृत अनुकूल परीक्षा प्रणाली बड़े पैमाने पर उपलब्ध हो जाएगी, तो कई प्रयासों की अनुमति होगी, बोर्ड परीक्षा 24 विषयों (3प्रति सेमेस्टर की होगी),

सरकारी स्कूलों को स्कूल परिसर नामक इकाइयों में बदल दिया जाएगा, जिसमें एक माध्यमिक विद्यालय (कक्षा9. 12) और अन्य पास के सभी स्कूल शामिल होंगे जो पूर्व जो–प्राथमिक से कक्षा 8 तक की शिक्षा प्रदान करते हैं परिसर के सभी स्कूलों के बीच शिक्षकों को साझा किया जाएगा।

## शिक्षा नीति की विरासत

**1.** पहली राष्ट्रीय शिक्षानीति 1968 में बनाई गई जो कोठारी आयोग की रिर्पोट पर आधारित थी। **2.** दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में अपनाई गई, जिसमें 1992 में संशोधन किया गया ।

**3.** पूर्व अफसरशाह टी. एस. आर. सुब्रह्मण्यम की अगुआई में एक समिति ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक मसौदा 2016 में सौंपा लेकिन उसे मोदी सरकार ने खारिज कर दिया उसके बाद प्रतिष्ठित वैज्ञानिक के कस्तूरी रंगन की अगुआई में नई समिति बनी, जिसने 31 मई 2019 को मसौदा पेश किया।